परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई
बारहवीं हिन्दी
चार्ली चैप्लिन यानी हम सब
लेखक – विष्णु खरे
मॉड्यूल -1 पेज-1

लेखक परिचय

विष्णु खरे (9 फरवरी,1940-19 सितंबर,2018) एक बड़े कवि, उत्कृष्ट अनुवादक, हिन्दी और विश्व-सिनेमा के गंभीर अध्येता, तीखे तेवर वाले साहित्यिक समीक्षक,संगीत रसिक और निर्भीक पत्रकार थे। हिन्दी की दुनिया उनको इन सभी रूपों में याद रखेगी।

मानवीय रिश्तों के प्रति गहरा लगाव रखने वाले खरे रिश्तों की परवाह किए बिना जरूरत पड़ने पर खड़ी-खड़ी कहने और लिखने में विश्वास करते थे। समकालीन हिन्दी जगत में उनके जैसा कोई मूर्तिभंजक नहीं था। लेकिन वे साहित्य संसार के के बड़े मूर्तिकार भी इस मायने में थे कि हिन्दी कविता में युवा प्रतिभाओं को सामने लाने और उनको स्थापित करने के लिए रूचि दिखाने वाला उनके जैसा कोई नहीं है। वे कई मामलों में बेजोड़ थे।

बतौर कवि विष्णु खरे ने न सिर्फ एक नई तरह की भाषा और संवेदना से समकालीन हिन्दी कविता को नया मियाज़ दिया बल्कि उसे बदला भी। एक बड़े कवि की पहचान इस बात से भी होती है कि वह पहले से चली आ रही कविता को कितना बदलता है।

और इस लिहाज से खरे अपनी पीढ़ी और समय के एक बड़े उदाहरण है। 'खुद अपनी आँख से' ,'सबकी आवाज के पर्दे में' , 'काल और अवधि के दरमियान' , 'पिछला बाकी' 'आलैन और अन्य कविताएँ' जैसे काव्य संग्रहों में उनका जो काव्य-व्यक्तित्व उभरता है उसकी मुकक्मल पहचान तो आने वाले समय में होगी। फिलहाल तो इतना ही कहा जा सकता है कि उनका काव्य संसार कई तरह की आवाजों से भरपूर है।

विष्णु खरे का जन्म मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में हुआ था। हालांकि वहाँ उनका पैतृक घर नहीं था पर ये छोटा-सा शहर उनकी काव्य-चेतना का अविभाज्य हिस्सा रहा। मुंबई और दिल्ली को छोड़कर यहाँ यदा-कडा लौटते भी थे। अपने जीवन के उत्तरार्ध में उन्होंने यहाँ किराए पर एक कमरा भी लिया था हालांकि एक साल पहले ही उसे अस्वस्थता की वजह से छोड़ भी दिया था। छिंदवाड़ा के जन-जीवन को लेकर उनकी कुछ यादगार कवितायें भी हैं।

खरे ने हिन्दी सिनेमा और विश्व सिनेमा पर भी काफी लिखा है। हिन्दी में भी और अँग्रेजी में भी। वे हिन्दी फिल्म संगीत के चलते फिरते विश्वकोश थे। किस फिल्म के कौन से गाने की धुन किस संगीतकार ने बनाई ये सब उनकी उँगलियों पर था।

पाठ का सारांश

पेज-2

चार्ली की माँ एक तलाक़शुदा महिला थी। वह स्टेज की सामान्य स्तर की अभिनेत्री थीं। बाद में उनके पागल हो जाने के कारण घर में भयंकर निर्धनता व्याप्त हो गई। माँ के पागलपन के साथ-साथ उद्योगपतियों, पूँजीपतियों तथा सामंतवादी प्रवृतियों जैसी विषमताओं से चार्ली को संघर्ष करना पड़ा। इस परिवेश में पूरी तरह ढलने के कारण ही करोड़पति हो जाने के बाद भी चार्ली ने अपने जीवन-मूल्यों में कभी बदलाव नहीं किया। यहूदी पिता तथा ख़ानाबदोश माता के पुत्र चार्ली ने कभी भी मध्यमवर्गीय बुर्जुवा अथवा उच्चवर्गीय जीवन-मूल्यों को नहीं अपनाया।उसका एकमात्र उद्देश्य अपनी कला द्वारा लोगों को हँसाना था।

बुद्धि की तुलना में चार्ली ने भावना को प्रथम स्थान दिया। इसके दो कारण थे। पहला, एक दिन चार्ली के बीमार होने पर उसकी माँ ने बाइबिल से ईसा मसीह की जीवनी पढ़कर सुनाई। ईसा के सूली पर चढ़ने के प्रसंग पर माँ और बेटा दोनों रो पड़े। इस कथा से चार्ली ने मानवता,स्नेह,करुणा का पाठ समझ लिया। दूसरी घटना ने भी चार्ली को बहुत प्रभावित किया। चार्ली के घर के पास कसाईखाना होने के कारण सैकड़ों जानवर मारने के लिए लाये जाते थे। एक बार एक भेड़ किसी प्रकार वहाँ से भाग गई और उसे पकड़ने वाले लोग कई बार फिसल कर गिर पड़े, जिन्हें देखकर लोग बहुत अधिक हँसने लगे। इसके बाद बेचारी भेड़ पकड़ी गई । चार्ली ने सोचा कि अब भेड़ के साथ क्या होगा? उसका हृदय पूरी तरह करुणा से भर गया। इसी के प्रभाव से हास्य के बाद करुणा, चार्ली चैप्लिन की भावी फिल्मों का आधारभूत मनोभाव बन गई।

लेखक ने चार्ली के माध्यम से सबको यह बता दिया है कि किसी कलाकार में करुणा एवं हास्य की भावना का पाया जाना उसकी श्रेष्ठता को दर्शाता है। मानव जीवन में भी करुणा यदि हास्य में बादल जाए, तो मनुष्य अपने संतापों को दूर कर सकता है। चार्ली का हास्य कब करुणा में बदल जाएगा और कब करुणा हास्य में बादल जाएगी, जाना नहीं जा सकता।भारतीयों ने भारतीय साहित्याशास्त्र के विरुद्ध चार्ली के इस प्रयोग को भी स्वीकार कर लिया। चार्ली के इसी अभारतीय सौंदर्यशास्त्र से प्रभावित होकर राजकपूर ने 'आवारा' फिल्म बनाई थी, जो वस्तुतः 'द ट्रैंप' का शब्दानुवाद है और चार्ली का भारतीयकरण। इसी परंपरा में दिलीप कुमार ने 'बाबुल', 'लीडर', 'गोपी' तथा देवानंद ने 'फंटूश' , 'तीन देवियाँ' इत्यादि फिल्में दी। आज जब कभी नायक की झाड़ू से पिटाई होती दिखती है तो चार्ली चैप्लिन की याद आ जाती है। उसकी नकल आज के कलाकार भी करते हैं,किन्तु उस मुकाम तक शायद आज तक कोई नहीं पहुँच पाया, इसलिए सब प्रयास में लगे हुए हैं। इसका कारण यह है कि चार्ली का अभिनय बच्चों, बूढ़ों और युवाओं को समान रूप से पसंद आता है।

सार्वभौमिकता, सदैव चिरमुद्रा दिखना, मानवीय स्वरूप अधिक व किसी भी संस्कृति के लिए विदेशी नहीं लगना आदि चार्ली की विशिष्टताएँ हैं। चार्ली में सबको अपना प्रतिबिंब नजर आता है। भारतीय समाज में केवल होली का अवसर ही अपने ऊपर हँसने देता है और इसके अलावा कहीं और कुछ भी ऐसा नहीं हैं, जो हमें अपने ऊपर हँसने का मौका दें। चार्ली की यही भूमिका चार्ली को सदैव जीवित बनाए रखती है। भारत में अपने ऊपर हँसने की, स्वयं हास्यास्पद बनने की परंपरा नहीं है, लेकिन चार्ली स्वयं पर सबसे अधिक हँसता है।

भारत में चार्ली के महत्त्व का प्रमुख कारण यही है। चार्ली बड़े-से-बड़े व्यक्ति पर हँसने का अवसर देता है। वह ऊँचे-से-ऊँचे स्तर पर जाकर भी हास्य का पात्र बन जाता है। इस प्रकार हम भी अपने जीवन के अधिकांश पड़ावों में चार्ली को याद करके हँस पड़ते हैं। ऐसे महान कलाकार में सभी को अपनी ही छवि दिखाई देता है और सभी उसे अपना मानने को उत्सुक रहते हैं।

चार्ली की फिल्मों की विशेषताएँ

*फिल्मों में भाषा का प्रयोग कम है।
*चार्ली में सार्वभौमिकता है।
*मानवीय स्वरूप अधिक है।
*सदैव चिरयुवा दिखता है।
*वह किसी भी संस्कृति के लिए विदेशी नहीं लगता।
*चार्ली सबको अपना ही स्वरूप लगता है।

xxxxx

द्वारा-
संतोष कुमार खरवाल
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-2, जादुगोड़ा।